बच्चों में भाषाई कौशल विकास में संस्था प्रधान की भूमिका

लेखक :डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका

राजस्थान स्कूल लीडरशिप अकादमी

सीमेट, जयपुर, राजस्थान

बच्चों में भाषाई कौशल विकास में संस्था प्रधान की भूमिका

संस्था प्रधान शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनका कार्य मुख्य होता है क्योंकि वे अपने छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं और उनके सभी मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक और भाषाई विकास की देखभाल करते हैं। बच्चों में भाषाई कौशल का विकास बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके संचार कौशल, मनोविज्ञानिक विचारधारा और सामाजिक संबंधों में सामंजस्य बनाता है।

संस्था प्रधानों को छात्रों के भाषाई विकास की ओर ध्यान देते हुए उच्च गुणवत्ता और मानकों को बनाए रखने की जिम्मेदारी होती है। वे छात्रों को सही अक्षर, शब्द और भाषा के उपयोग को सिखाने में मार्गदर्शन करते हैं। संस्था प्रधान भी छात्रों को अच्छी वाणी और भाषा का उपयोग करके विचारों को व्यक्त करने की प्रेरणा देते हैं। इसके बाद, वे अपने छात्रों के संचार कौशल का प्रशिक्षण भी करवाते हैं जिससे वे सही और स्पष्ट ढंग से विवेकशील भाषा का उपयोग कर सकें। (सोन, एट अल., 2013)।

छात्रों के भाषाई कौशल का प्रमुख विकास उनकी लेखन क्षमता पर भी असर डालता है। इसलिए, संस्था प्रधानों द्वारा छात्रों को बेहतर लेखन क्षमता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। वे छात्रों को विभिन्न लेखन विधियों, जैसे कि निबंध, कविता, और रिपोर्ट लिखने के माध्यम से सिखाने में मार्गदर्शन कर सकते हैं। इसके अलावा, वे उन्हें संबंधित सामग्री की शुद्धि और व्याकरण पर ध्यान देना सिखा सकते हैं। यह सभी विचारों और उत्प्रेरणाओं के माध्यम से छात्रों को एक सुसंगत भाषा का व्यक्ति बनाने में मदद करेगा।

संस्था प्रधानों, विद्यालय प्रमुखों की भूमिका बच्चों में भाषाई कौशल का विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। वे छात्रों को भाषा के अनुरूप व्यक्ति बनाने में मदद करते हैं और विभिन्न कौशल विकसित करने का संदेश देते हैं। इस प्रकार, संस्था प्रधानों का योगदान बच्चों के व्यक्तित्व विकास में अहम भूमिका निभाता है जो उनके भाषाई कौशल और मानसिक विकास को वर्धित करता है (रॉबर्ट्स, 2014)।

संस्था प्रधान की भूमिका बच्चों के भाषाई कौशल का विकास करने में महत्वपूर्ण होती है। बच्चों की सही शिक्षा और संदर्भों को समझने की क्षमता के लिए अच्छी भूमिका का होना बहुत जरूरी होता है। एक अच्छे संस्था प्रधान के पास प्रशासनिक कौशल के साथसाथ-, विद्यार्थियों के विकास में विभिन्न शैक्षिक समस्याओं को समझने की क्षमता होनी चाहिए। भाषाई कौशल

एक ऐसा कौशल है जो बच्चों के सही माध्यम से विचार, भावना और विविधता को व्यक्त करने में मदद करता है (एंडरसन, 2012)।

अच्छे संस्था प्रधान बच्चों के भाषाई कौशल के विकास के लिए स्थायी योजनाएं और कार्यक्रम तैयार कर सकते हैं। विभिन्न भाषा संबंधी गतिविधियों, शब्दावली का विकास, बच्चों को पढ़ाने और लिखाने के लिए प्रेरित करने के लिए वीडियो और ऑडियो सामग्री के उपयोग के माध्यम से भाषाई कौशल का विकास किया जा सकता है। छात्रों को स्वतंत्र रूप से सोचने, समस्याओं का समाधान करने और अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए अवसर देना चाहिए (डन, और डन, 2022)।

संस्था प्रधान का एक और महत्वपूर्ण कार्य शिक्षकों के भीतर भाषाई कौशल के विकास को प्रोत्साहित करना है। उन्हें बच्चों को समझाने और उनके भाषाई कौशल को मजबूत बनाने के लिए सेमिनार, कार्यशाला, ट्रेनिंग और विभिन्न शिक्षा योजनाओं का आयोजन करना चाहिए।

संस्था प्रधानों को लगातार बच्चों के भाषाई कौशल को निरीक्षण करना चाहिए। यह शैकक्षणिक वातावरण बच्चों की वाणी विकास के लिए महत्वपूर्ण है। संस्था प्रधानों को बच्चों के रचनात्मक लेखन, भाषा के नियमों का पालन करने, सही उच्चारण के साथ बोलने पर ध्यान देना चाहिए। उम्र के अनुसार उन्हें उपयुक्त साहित्य सौंदर्य और संगठन में रुचि रखने के लिए प्रेरित करना चाहिए (हैमर, एट अल।, 2012)।

भाषाई कौशल विकास संस्था प्रधान की जिम्मेदारी होती है और इसमें प्रारंभिक शिक्षा की गंभीरता होनी चाहिए। नवीनतम और संबद्ध कोचिंग में अद्यतन रहने के साथसाथ-, पाठ्यक्रमों में रचनात्मकता और मनोवैज्ञानिकता शामिल होनी चाहिए। बच्चों का भाषाई कौशल विकास समाज के विकास में एक महत्वपूर्ण माध्यम है, इसलिए संस्था प्रधान को इसे अपनी प्राथमिकता बना लेना चाहिए (वीस्किटेल, 2020)।

भाषा कौशल क्या है

भाषा कौशल वे क्षमताएं हैं जो आपको अपने विचारों को सुसंगत रूप से व्यक्त करने और दूसरों के साथ संवाद करने में सक्षम बनाती हैं। ये कौशल उस जानकारी को संरचना और प्रासंगिकता प्रदान करते हैं जो आप प्राप्तकर्ता को बताना चाहते हैं। पढ़ना, लिखना, सुनना और बोलना चार आवश्यक कौशल हैं जिनमें बुनियादी भाषा दक्षता शामिल है। संचार करते समय,

लोग आमतौर पर इन कौशलों के संयोजन का एक साथ उपयोग करते हैं। सही कौशल का चयन आमतौर पर संदेश की तात्कालिकता, लक्षित लोगों की संख्या और यह औपचारिक या अनौपचारिक संचार है या नहीं, विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है।

बातचीत करते समय दो या दो से अधिक भाषा क्षमताओं का मेल होना आम बात है। ये कौशल, जब एक साथ उपयोग किए जाते हैं, एक-दूसरे पर सह-निर्भर होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि सुनना सूचना का एक इनपुट है, तो बोलना आउटपुट का एक रूप है जहां श्रोता संदेश सुनने के बाद हस्तक्षेप कर सकते हैं, प्रश्न पूछ सकते हैं या इनपुट प्रदान कर सकते हैं। इसी प्रकार, लेखन जो पढ़ा, समझा और व्याख्या किया गया है उसका सारांश आउटपुट है, जिसके लिए पढ़ने के कौशल की आवश्यकता होती है।

भाषा-कौशल के प्रकार:

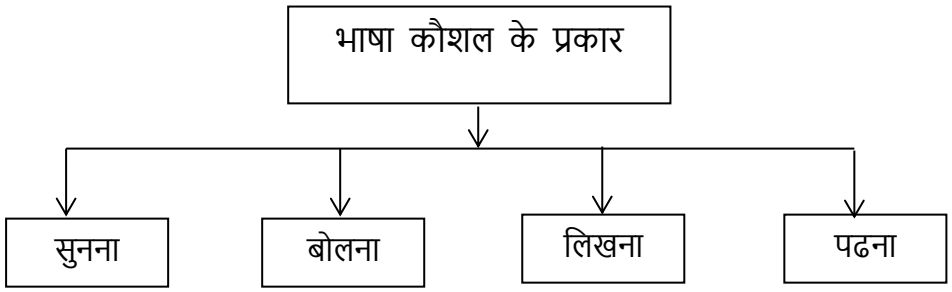

1. सुनना

सुनने से तात्पर्य वक्ता के संदेश को समझने, व्याख्या करने और उसका विश्लेषण करने से है। सुनना संचार प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है क्योंकि श्रोता के लिए व्यस्त रहना और जो कहा गया है उसे सक्रिय रूप से समझना महत्वपूर्ण है। इससे स्पष्टता बढ़ाने, प्रासंगिक प्रश्न पूछने, उचित प्रतिक्रियाएँ तैयार करने और ग़लतफहमियाँ रोकने में मदद मिलती है। बैठकों, चर्चाओं, फीडबैक सत्रों और साक्षात्कारों में भाग लेते समय सुनना महत्वपूर्ण है।

ध्यान से सुनने के कई फायदे हैं जो बातचीत खत्म होने के बाद भी जरूरी हो सकते हैं। सक्रिय रूप से सुनने से आपको बाद में याद रखने के लिए जानकारी को संसाधित करने और संग्रहीत करने में मदद मिल सकती है। सामने वाला व्यक्ति क्या कह रहा है, उस पर ध्यान केंद्रित करने से भी फोकस बढ़ाने में मदद मिल सकती है और आप अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में सक्षम हो सकते हैं।

2. बोलना

बोलना आपके विचारों और धारणाओं की मौखिक अभिव्यक्ति है। प्रभावी ढंग से बोलने में आपकी अभिव्यक्ति और शब्दावली में स्पष्टता और प्रवाह शामिल है। इसमें आत्मविश्वास, जुनून और कहानी कहने जैसी अन्य आवश्यक क्षमताएं भी शामिल हैं। जब कंपनियां नए कर्मचारियों को काम पर रखती हैं तो बोलने का कौशल आमतौर पर महत्वपूर्ण होता है। मजबूत बोलने का कौशल आपको अपने करियर में प्रगति करने, बैठकों के दौरान योगदान देने और आपके पारस्परिक संबंधों को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

3. लिखना

लेखन में सही संरचना और सूचना के प्रवाह का उपयोग करके अपने विचारों को पाठ के रूप में प्रस्तुत करना शामिल है। लेखन में लक्षित दर्शकों के अनुसार पाठ के प्रारूप और स्वर को बदलना शामिल है। आप जो कहना चाहते हैं उसके लिए सही शब्दावली, माध्यम और रूपरेखा का चयन यह सुनिश्चित कर सकता है कि आपका लेखन दिलचस्प है और इच्छित संदेश देता है। व्याकरणिक रूप से सटीक पाठ लिखना, छोटे वाक्यों का उपयोग करना और व्यापक रूप से शोध करना आपके पाठ को अधिक प्रभावशाली बनाने के कुछ तरीके हैं।

भूमिका या उद्योग से कोई फर्क नहीं पड़ता, पेशेवर अक्सर ईमेल, रिपोर्ट, पत्र और प्रस्ताव लिखते हैं। यह लेखन कौशल को सभी पेशेवरों के लिए आवश्यक बनाता है, विशेष रूप से आईटी, मार्केटिंग, रणनीति, परामर्श और डेटा एनालिटिक्स उद्योग में।

4. पढ़ना

पढ़ने का कौशल विभिन्न पाठों, उनके संदर्भ और निष्कर्ष को समझने में मदद करता है। ये कौशल आपके समग्र साक्षरता कौशल को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये आपकी शब्दावली, अभिव्यक्ति, विश्लेषण और संचार को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। पत्र, संदेश, नोट्स, मेमो, ईमेल और रिपोर्ट जैसे विभिन्न पाठ रूपों को ध्यान से पढ़ने से आपके व्यक्तिगत और व्यावसायिक संबंधों में गलत संचार को रोकने में मदद मिल सकती है। पढ़ते समय सावधान और केंद्रित रहने से आपको पाठ के अर्थ की प्रभावी ढंग से व्याख्या करने और जानकारी को लंबी अवधि तक बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

भाषा विकास में संस्था प्रधान **का योगदान और शैक्षिक दृष्टिकोण**

बच्चों के भाषाई कौशल विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

संस्था प्रधान स्कूली प्रशासनिक नियमन के प्रमुख होते हैं और स्कूल के सभी कार्यों को संचालित करते हैं। संस्था प्रधान बहुत सारी चुनौतियों का सामना करते हैं, जिसमें से एक चुनौती यह है कि उन्हें बच्चों के भाषाई कौशल विकास के लिए विभिन्न प्रयास करने की जरूरत होती है। बच्चों के भाषाई कौशल विकास का महत्व बहुत है क्योंकि यह उनका मस्तिष्क सशक्त बनाता है, उन्हें अधिक संवादात्मक बनाता है और उन्हें सामान्य ज्ञान की विस्तृत जानकारी प्रदान करता है।

संस्था प्रधान की भूमिका यहां महत्वपूर्ण होती है चूंकि वह विद्यालय में शिक्षकों के साथ संपर्क में होते हैं और विद्यालय के भाषाई पाठ कार्यक्रम को नियोजित करते हैं। उन्हें बच्चों के पाठ्यक्रम में भाषाई गतिविधियों का सम्पादन करना चाहिए, जिससे कि बच्चों को अनुभव करने और सीखने का मौका मिले। संस्था प्रधान को पाठ्यक्रम अद्यतन करने की जरूरत होती है और उन्हें नवीनतम शिक्षण विधियों का भी प्रयोग करना चाहिए जिससे बच्चों को भाषाई कौशल आगे बढ़ाने में मदद मिल सके।

संस्था प्रधान को भाषाई कौशल के विकास के लिए और भी विभिन्न प्रयास करने चाहिए, जैसे कि स्पीच प्रतियोगिताएं आयोजित करना, वार्तालाप पाठयक्रमों की व्यवस्था करना, और भाषाई दृष्टिकोण से रोचक समाचारों और कहानियों को बच्चों के साथ साझा करना। इन सभी कार्यक्रमों के माध्यम से, संस्था प्रधान बच्चों के भाषाई कौशल को प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें स्वतंत्रता की भावना देते हैं।

इसलिए, संस्था प्रधान को भाषाई कौशल के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालना चाहिए। वे स्कूली प्रशासनिक नियमन के प्रमुख होते हैं और विद्यालय के सभी कार्यों को संचालित करते हैं, इसलिए उनकी सक्रियता और संबंध-बनावट के माध्यम से वे बच्चों के भाषाई कौशल का विकास करने का एक महान कारक हो सकते हैं।

संस्था प्रधान का महत्व शिक्षा के क्षेत्र में अनमोल होता है। संस्था प्रधान अपने क्षेत्र के आदेशों और निर्देशों को निष्पादित करने का जिम्मेदार होता है। संस्था प्रधान की भूमिका भाषाई कौशल विकास में विशेष महत्वपूर्ण होती है, खासकर बच्चों में। संस्था प्रधान के निर्देशों का पालन करने से बच्चों का व्यक्तित्व विकसित होता है, जो उनके भाषाई कौशल का विकास करने में मदद करता है। संस्था प्रधान के माध्यम से बच्चे

भाषाई कौशल को सीखते हैं। वे बच्चों को भाषा कौशल काम करने और सही ढंग से वार्तालाप करने की सीख देते हैं। उदाहरण के तौर पर, संस्था प्रधान बच्चों को इसके लिए बाल सभा आयोजित करते हैं, जहां वे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और अनुभव और अवधारणाओं को साझा करते हैं। इसके अलावा, संस्था प्रधान वार्तालापिक क्षमता को बढ़ावा देने के लिए प्रायोगिक गतिविधियों का भी आयोजन करते हैं। संस्था प्रधान इस तरह से शिक्षा कोच होता है। शिक्षा कोच के रूप में संस्था प्रधान बच्चों को उनके शिक्षार्थी जीवन में मार्गदर्शन करता है और उन्हें भाषाई कौशल विकसित करने में मदद करता है। इसके तहत, शिक्षा कोच बच्चों को उच्चतम स्तर की शिक्षा और संभाषण कौशल प्रदान करता है। इस प्रकार, संस्था प्रधान की भूमिका बच्चों के भाषाई कौशल के विकास में प्रमुख होती है। यह कौशल बच्चों के व्यक्तित्व और समाज में सुरक्षा और सशक्तिकरण को विकसित करने में मदद करती है। इसलिए, संस्था प्रधान की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है और हमें इसे महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण से देखना चाहिए।

संस्था प्रधान बच्चों के भाषाई कौशल के विकास में वास्तव में नीति निर्माता हैं और उनकी भाषा नीति-निर्माण उनकी भाषा विचारधाराओं से प्रभावित होती है। सीखाने वाले नेताओं के रूप में, संस्था प्रधान को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षकों ने प्रशिक्षण परिणामों को लागू किया है, छात्रों की सीखने की जरूरतों को पूरा किया है, और स्कूल की गुणवत्ता में सुधार के लिए समुदाय को शामिल किया है। संस्था प्रधान के पास शिक्षकों की शैक्षणिक और सामाजिक दक्षताओं को विकसित करने की एक रणनीति होनी चाहिए, जिससे शैक्षणिक और सामाजिक कौशल में सुधार हो सके। अंग्रेजी भाषा दक्षता कार्यक्रमों के संदर्भ में, संस्था प्रधान कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू करने और सीखने और सीखाने के वातावरण को प्रभावित करने के लिए अपने व्यक्तिगत तर्क को लागू करते हैं।

बच्चों में भाषा कौशल के विकास में संस्थानों की भूमिका विषय पर, बच्चे के समग्र विकास में भाषा के महत्व को समझना महत्वपूर्ण है। भाषा कौशल संचार, संज्ञानात्मक विकास और शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए, संस्थानों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे बच्चों में भाषा कौशल को बढ़ावा देने और बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाएं।

सबसे पहले, स्कूल और शैक्षिक केंद्र जैसे संस्थान एक संरचित वातावरण प्रदान करते हैं जहां बच्चे पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना सहित भाषा के विभिन्न पहलुओं को सीख और अभ्यास कर सकते हैं। एक अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया पाठ्यक्रम जो भाषा विकास पर जोर देता है, बच्चे के समग्र भाषाई विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। संस्था प्रधान विभिन्न भाषा कौशलों को बढ़ाने के लिए कहानी कहने, पढ़ने की समझ, निबंध लेखन और सार्वजनिक बोलने जैसी भाषा-संबंधित गतिविधियों और अभ्यासों की एक श्रृंखला प्रदान कर सकते हैं।

दूसरे, संस्था प्रधान एक समावेशी और सहायक वातावरण भी बना सकते हैं जो बच्चों को खुद को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। बच्चों को अपने विचारों और भावनाओं को संप्रेषित करने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करके, आत्मविश्वास बनाने और भाषा प्रवाह में सुधार करने में मदद कर सकते हैं। शिक्षक और बच्चों में प्रभावी संचार कौशल को बढ़ावा देने के लिए समूह चर्चा, वाद-विवाद और रोल-प्ले जैसी इंटरैक्टिव शिक्षण विधियों को अपना सकते हैं।

इसके अलावा, संस्था प्रधान कई भाषाओं की शिक्षा को बढ़ावा देकर बहुसंस्कृतिवाद और बहुभाषावाद को भी बढ़ावा दे सकते हैं। आज की वैश्वीकृत दुनिया में, एक से अधिक भाषाओं में पारंगत होना बच्चों को प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त प्रदान कर सकता है। विदेशी भाषाओं या क्षेत्रीय भाषाओं को सिखाने वाले भाषा कार्यक्रमों की पेशकश करके, संस्था प्रधान बच्चों के भाषा कौशल और सांस्कृतिक जागरूकता का विस्तार कर सकते हैं।

औपचारिक शिक्षा के अलावा, संस्था प्रधान भाषा विकास को प्रोत्साहित करने वाली पाठ्येतर गतिविधियों को भी शामिल कर सकते हैं। नाटक, गीत और रचनात्मक लेखन जैसी गतिविधियाँ बच्चों को भाषा के विभिन्न रूपों के माध्यम से अपने विचारों को खोजने और व्यक्त करने में मदद कर सकती हैं। ये गतिविधियाँ न केवल भाषा कौशल को बढ़ाती हैं बल्कि रचनात्मकता और कल्पना को भी बढ़ावा देती हैं।

सारकप में, बच्चों में भाषा विकास को बढ़ावा देने में संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। एक व्यापक भाषा पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन, एक समावेशी वातावरण बनाना, भाषा

विविधता को बढ़ावा देना और पाठ्येतर गतिविधियों को शामिल करना बच्चों के भाषाई विकास में अपना योगदान दे सकता है। भाषा कौशल पर ध्यान केंद्रित करके, संस्था प्रधान बच्चों को प्रभावी संचार, बौद्धिक विकास और उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफलता के लिए आवश्यक उपकरणों से मुक्त कर सकते हैं।

संस्था प्रधान बच्चों को भाषा-कौशल सुधारने में कैसे मदद करते हैं

बच्चों के भाषा कौशल को बेहतर बनाने के लिए अनुकूल माहौल बनाने में संस्था प्रधान महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वह निम्नलिखित रूप से बच्चों में भाषाई कौशल विकास में अपना योगदान दे सकते हैं:

भाषा विकास को प्राथमिकता:

संस्था प्रधान यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि स्कूल के पाठ्यक्रम में भाषा विकास को प्राथमिकता दी जाए। वे सभी विषयों और ग्रेड स्तरों पर भाषा-निर्माण गतिविधियों को एकीकृत करने के लिए शिक्षकों के साथ काम कर सकते हैं।

व्यावसायिक विकास:

संस्था प्रधान प्रभावी भाषा निर्देश तकनीकों पर शिक्षकों के लिए कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण सत्र आयोजित कर सकते हैं। इसमें शब्दावली विकास, पढ़ने की समझ, लेखन कौशल और मौखिक संचार के लिए रणनीतियाँ शामिल हो सकती हैं।

संसाधन आवंटन:

संस्था प्रधान स्कूल में भाषा विकास पहल का समर्थन करने के लिए पुस्तकें, शैक्षिक प्रौद्योगिकी और भाषा-शिक्षण सामग्री जैसे संसाधन आवंटित कर सकते हैं।

पाठ्येत्तर गतिविधियाँ:

बच्चों में भाषाई कौशल विकास के लिए पाठ्येत्तर गतिविधियों को भी सस्था प्रधान द्वारा रुचिकर बनाना चाहिए ये पर विभिन्न भामाई कौशल आधारि पाठ्येत्तर गतिविधियों यथा- निबंध, भाषण काव्य कथा, पत्र वाचन, कहानी वाचन, गायन, सुलेख आदि प्रतियोगिताओ का प्रभावी आयोजन करवाना जाना चाहिए।

लैंग्वेज लेब

संस्था प्रधान विद्यालय में बच्चों कों भाषाई कौशल सिखाने के लिए लैंग्वेज लेब की स्थापना कर सकते है

लैंग्वेज लेव में प्रमाणिक व भोगोलिक विभिन्न भाषाओं के शुद्ध उच्चारण सम्बन्धित ऑडियों विजुअल का संग्रह होना।

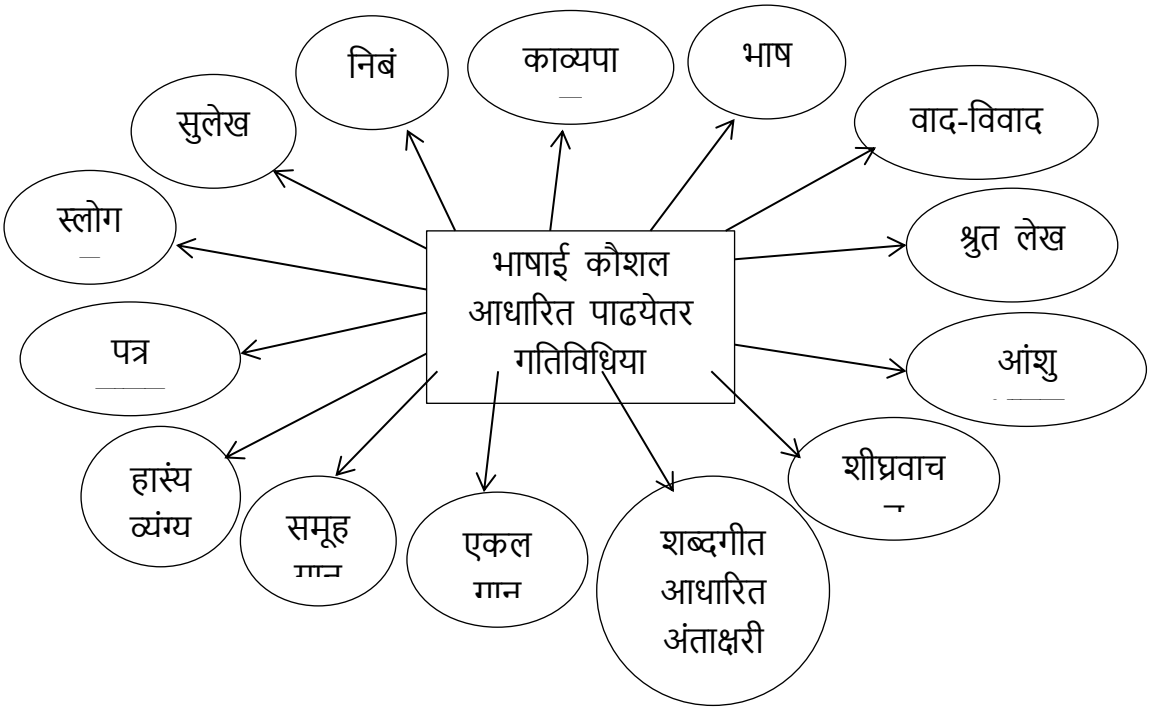

अंग्रेजी भाषा सीखने वालों (ईएलएल) के लिए सहायता:

संस्था प्रधान विशेष रूप से ईएलएल छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए कार्यक्रमों और सहायता सेवाओं को लागू कर सकते हैं। इसमें द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी (ईएलएल) कक्षाएं, द्विभाषी शिक्षा कार्यक्रम और भाषा विशेषज्ञों से अतिरिक्त सहायता शामिल हो सकती है।

साक्षरता को बढ़ावा देना:

पढ़ने के प्रति प्रेम को बढ़ावा देने और छात्रों के साक्षरता कौशल में सुधार करने के लिए संस्था प्रधान पढ़ने की चुनौतियाँ, लेखकवार्ता, पुस्तक मेले और कहानी कहने के सत्र जैसे साक्षरता कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं।

प्रगति की निगरानी:

संस्था प्रधान नियमित रूप से छात्रों की भाषा दक्षता के स्तर का आकलन कर सकते हैं और समय के साथ उनकी प्रगति की निगरानी कर सकते हैं। इससे सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने और निर्देशात्मक निर्णयों को सूचित करने में मदद मिल सकती है।

माता-पिता और सामुदायिक जुड़ाव:

संस्था प्रधान घर और समुदाय में भाषा-समृद्ध वातावरण को बढ़ावा देने वाली कार्यशालाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों का आयोजन करके माता-पिता और समुदाय को भाषा विकास पहल में शामिल कर सकते हैं।

भाषा-समृद्ध वातावरण बनाना:

संस्था प्रधान यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि स्कूल का वातावरण शब्दावली शब्दों को प्रदर्शित करके, भाषा-समृद्ध चर्चाओं के अवसर प्रदान करके और छात्रों को मौखिक और लिखित रूप से खुद को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करके भाषा विकास का समर्थन करता है।

भाषा शिक्षकों के साथ सहयोग:

संस्था प्रधान उन छात्रों की पहचान करने के लिए स्कूल परामर्शदाताओं, भाषण विशेषज्ञ और भाषा शिक्षकों के साथ सहयोग कर सकते हैं जिन्हें भाषा विकास में अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता हो सकती है और उचित हस्तक्षेप प्रदान कर सकते हैं।

रीडिंग क्लब

बच्चों के वाचन कौशल में दक्षता लाने के लिए विद्यालयों में रीडिंग क्लब का गठन किया जाता है।

रीडिंग क्लब की गतिविधिया प्रार्थनासभा में दैनिक कारवाई की जा सकती है तथा साप्ताहिक व मासिक रीडिंग मैराथन का आयोजन कर विजेताओं को पुरस्कृत किया जा सकता है।

राईटिंग क्लव

बच्चो में लेखन कौशल में दक्षता लाने के लिए विद्यालयों में राईटिंग क्लब का गठन किया जाता है।

राईटिंग क्लब की गतिविधिया विद्यालय मध्यान्तर, पुस्तकालय कालांश के समय करवाई की जा सकती है।

सामूहिक व मासिक राईटिंग क्लब गतिविधियों में सुलेख, शीघ्रलेखन आदि प्रतियोगिताओ का आयोजन कर विजेताओं को पुरस्कृत किया जा सकता है।

२०२० में भाषाई कौशल व संस्था प्रधान की भूमिक:

नई शिक्षा नीति

नई शिक्षा नीति बच्चों के समग्र विकास और भाषाई कौशल के महत्व पर जोर देती है। यहां तीन तरीके हैं जिनसे संस्था प्रधानों की भूमिका इस नीति के साथ जुड़ती है:

- बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए नई शिक्षा नीति के आदेश को लागू करने में संस्था प्रधान महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे स्कूली पाठ्यक्रम में बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रमों के एकीकरण की शुरुआत और देखरेख कर सकते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि छात्रों को कई भाषाओं में सीखने और दक्षता विकसित करने का अवसर मिले। इसमें योग्य भाषा शिक्षकों को नियुक्त करना, उपयुक्त शिक्षण सामग्री प्राप्त करना और एक सहायक वातावरण बनाना शामिल हो सकता है जहां भाषाई विविधता का उत्सव मनाया जाए।
- संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करने के लिए उत्तरदायी हैं कि शिक्षक बच्चों को भाषाई कौशल प्रभावी ढंग से सिखाने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से युक्त हैं। निरंतर व्यावसायिक विकास पर नई शिक्षा नीति के जोर के अनुरूप, संस्था प्रधान भाषा शिक्षण पद्धतियों, भाषा अधिग्रहण सिद्धांतों और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र पर केंद्रित कार्यशालाओं, सेमिनारों और प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन कर सकते हैं। शिक्षक विकास में निवेश करके, संस्था प्रधान भाषा निर्देश की गुणवत्ता में सुधार करने और बच्चों के लिए सकारात्मक सीखने के परिणामों को बढ़ावा देने में योगदान देते हैं।
- संस्था प्रधान बच्चों के भाषाई विकास में सहायता के लिए माता-पिता, समुदायों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग और साझेदारी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे अभिभावक कार्यशालाओं, भाषा विकास कार्यक्रमों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों का आयोजन करके माता-पिता को अपने बच्चों की भाषा सीखने की यात्रा में शामिल कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, संस्था प्रधान अतिथि व्याख्यान, भाषा शिविर और विनिमय कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों के लिए भाषा सीखने के अनुभव को समृद्ध करने के लिए स्थानीय सामुदायिक संगठनों, भाषा विशेषज्ञों और विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग कर सकते हैं। मजबूत साझेदारियाँ बनाकर, संस्था प्रधान नई शिक्षा नीति की समग्र दृष्टि के अनुरूप, बच्चों के लिए कक्षा के

अंदर और बाहर दोनों जगह अभ्यास करने और अपने भाषाई कौशल को बढ़ाने के अवसर पैदा करते हैं।

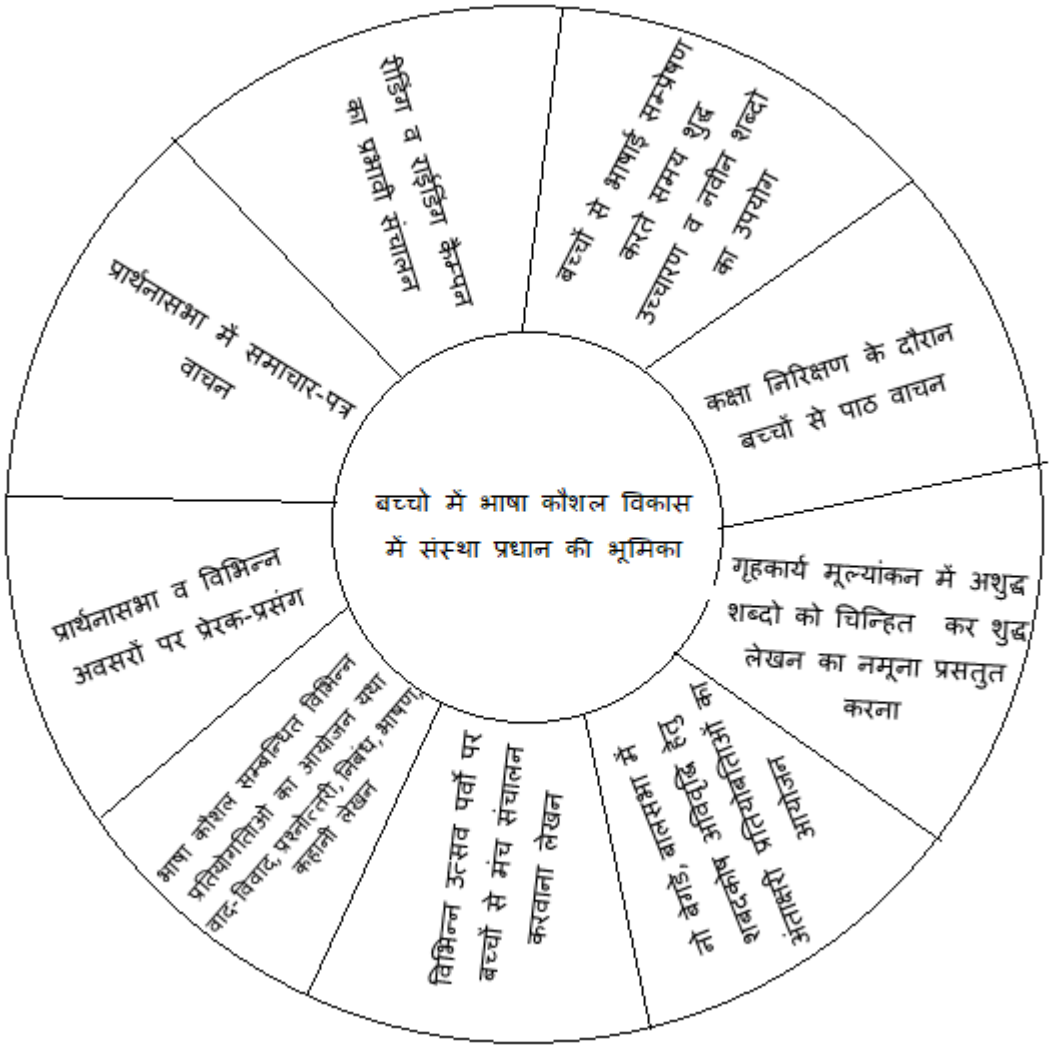

केस स्टडी

पीएमश्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राहोली के संस्था प्रधान डा॔.योगेन्द्र सिंह नरूका ने बच्चों में भाषाई कौशल विकास के लिए कुछ नवाचार किए।

प्रार्थना सभा में बच्चों से समाचार पत्र वाचन शुरू करवाया,प्रार्थना सभा में प्रतिदिन किसी ना किसी बच्चें को कहानी सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया तथा सप्ताह में श्रेष्ठ समाचार वाचक,कहानी वाचक को कहानियों की पुस्तक देकर पुरस्कृत किया गया जिससे वो ओर कहानियाँ पढ़ कर सुना सके। नो बेग डे पर आशु भाषण वाद विवाद, निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। जिसके परिणामस्वरूप बच्चों की भाषाई दक्षता में अभिवृद्धि हुई।

मध्यान्ह अवकाश में लेखन में कमजोर विद्यार्थियों को संस्थाप्रधान डॉ.नरूका ने अपने कक्ष में बैठा कर प्रतिदिन हिन्दी, अंग्रेजी का एक-एक पृष्ठ लिखवाया,लेखन सुधार की आवश्यक बाते बताई,गलतियों को बताया,शब्द व वाक्य विन्यास के बारे में बताया परिणामस्वरूप विद्यालय के बच्चों में भाषाई कौशल दक्षता का विकास हुआ व बच्चे विभिन्न भाषाई कौशल आधारित प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने लगे।

लिंक:

https://youtu.be/E1YplF-90Jc?si=27jvUYmre7nXgAyY

https://youtu.be/3p6COxeh4ps?si=BTcgjRKBxzwNMZsj

https://youtube.com/shorts/4uML9lHGR8o?si=uhzBCjt2y36qdvWb

सन्दर्भ:

1. अल नेयादी, एम.के.ए. (2015)। सामान्य शिक्षा कक्षाओं में विकलांग छात्रों को शामिल करने के प्रति माता-पिता का रवैया। अल ऐन: संयुक्त अरब अमीरात विश्वविद्यालय।

2. एंडरसन, आर. टी. (2012)। स्पैनिश बोलने वाले बच्चों में पहली भाषा का नुकसान: नुकसान के पैटर्न और नैदानिक अभ्यास के लिए निहितार्थ। बी. ए. गोल्डस्टीन (एड.) में, स्पेनिश-अंग्रेजी बोलने वालों में द्विभाषी भाषा विकास और विकार (पीपी. 187-211)। बाल्टीमोर: ब्रूक्स.

3. कोहेन, ई. (2015)। प्रमुख नेतृत्व शैलियाँ और शिक्षक और प्रमुख दृष्टिकोण, चिंताएँ और समावेशन के संबंध में दक्षताएँ। प्रोसीडिया समाज. व्यवहार. विज्ञान. 186, 758-764.

4. डन, एल.एम., और डन, एल.एम. (2022)। पीपीवीटी-4 मैनुअल। ब्लूमिंगटन: एनसीएस पियर्सन, इंक.

5. डायल, ए., फ्लिंट, डब्ल्यू., और बेनेट-वॉकर, डी. (2021)। स्कूल और समावेशन: प्राचार्यों की धारणा। स्पष्ट। मकान 70, 32-35.

6. हैमर, सी.एस., कोमारॉफ़, ई., रोड्रिग्ज, बी.एल., लोपेज़, एल.एम., स्कार्पिनो, एस.ई., और गोल्डस्टीन, बी. (2012)। स्पैनिश-अंग्रेज़ी द्विभाषी बच्चों की भाषा क्षमताओं का पूर्वानुमान लगाना। जर्नल ऑफ़ स्पीच, लैंग्वेज, एंड हियरिंग रिसर्च, 55, 1251-1264।

7. डी जोंग, एन.एच., स्टीनल, एम.पी., फ्लोरिजन, ए., शूनेन, आर., और हुलस्टिजन, जे.एच. (2013)। भाषाई कौशल और दूसरी भाषा में धाराप्रवाह बोलना। अनुप्रयुक्त मनोभाषाविज्ञान, 34(5), 893-916।

8. हुसैन, ए.एस. (2017)। विशेषता और सांस्कृतिक पहचान द्वारा समावेशन शिक्षा के प्रति यूएई प्रीस्कूल शिक्षकों का दृष्टिकोण। डॉक्टरेट शोध प्रबंध, वाल्डेन विश्वविद्यालय, वाशिंगटन।

9. वुकोविक, आर.के., और लेसॉक्स, एन.के. (2013)। भाषाई कौशल और अंकगणितीय ज्ञान के बीच संबंध. सीखना और व्यक्तिगत अंतर, 23, 87-91.

10. रॉबर्ट्स, टी.ए. (2014)। आख़िरकार इतना मौन नहीं: बचपन में दूसरी भाषा के अधिग्रहण में मौन अवस्था का परीक्षण और विश्लेषण। प्रारंभिक बचपन अनुसंधान त्रैमासिक, 29(1), 22-40।

11. बेटा, एस.एच.सी., क्रोन, के.ए., जियोन, एच.जे., और हांग, एस.वाई. (2013, दिसंबर)। हेड स्टार्ट कक्षाओं और बच्चों की स्कूल की तैयारी को शिक्षकों की योग्यता और चल रहे प्रशिक्षण से लाभ मिलता है। बाल एवं युवा देखभाल फोरम में (खंड 42, पृ. 525-553)। स्प्रिंगर यू.एस.

12. उस्मान, एफ. (2011)। दुबई पब्लिक स्कूलों में शामिल किए जाने के प्रति प्रधानाध्यापकों का रवैया: वे कहां खड़े हैं? मास्टर थीसिस, लोयोला यूनिवर्सिटी शिकागो, शिकागो, आईएल।

13. वीस्किटेल, पी. (2020)। नेतृत्व की अवधारणा. नेफ्रोलॉजी नर्सिंग जर्नल, 26(5), 467।

लेखक : डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका
रा. उ.मा. वि , राहोली